ARYAVART SHODH VIKASH PATRIKA
RNI TITLED NO. UPBBIL04292
RNI REG. NO. UPBBIL/2014/66218 PP. NO. 273-276
ISSN NO.-2347-2944
Vol.-7, No.-I, Issues-VIII YEAR- June-2017

वर्तमान भारत में नारी शिक्षा और विकास

डॉ0 सुधा राय

एसो0 प्रो0–अध्यक्षः हिन्दी–विभाग, रा0मो0ग0पी0जी0 कॉलेज, फैजाबाद, अयोध्या (उ0प्र0) भारत

एक नहीं दो–दो मात्राएँ। नर से बढ़ कर नारी ।।

नारियों के विषय में कहा गया है, किन्तु वर्तमान परिवेश में कितना ग्रहण किया गया है, कितना उसके अधिकार को समझा गया है, कितना उसको विकास करने का अवसर दिया गया है, बात यहाँ आकर गड्म–गड् हो जाती है।

' नारी' वास्तव में हमारे समाज के विकास की धुरी है। इस पर चिन्तन करना, और अन्तस्तल में उतारना और प्रायोगिक धरातल पर खरा उतरना दीगर बात है।

"Men make Society but women make Men-"

अर्थात "पुरुष तो समाज बनाता है, किन्तु नारी तो पुरुष को ही बनाती है।" आज फिर नारी की स्थिति का विश्लेषण करना पड़ रहा है, यह आवश्यक भी है। क्या करे कोई ? समय ही ऐसा है। नारी जिसे पुरूष के प्रत्येक कार्य में भागीदार बनाया गया, उसे अपने अस्तित्व की रक्षा करने के लिए संघर्ष करना पड़ रहा है। वही नारी सृष्टि रचना में प्रथम पुरुष हो, चाहे आदम हो या मनु की सहायता की। उसे अपने अधिकारों की रक्षा हेतु पुरुषों से अनपेक्षित वैचारिक युद्ध लड़ना पड़ रहा है।

आज भी हमारी जनसंख्या का बड़ा भाग नारी स्वतन्त्रता का विरोध करता है। नारी स्वतन्त्रता एवम् अधिकारों पर केवल वैचारिक मतभेद होता तो बात कुछ और थी। परन्तु जब प्रश्न नारी शोषण का हो, उसके अधिकारों के हर प्रकार के हनन की बात होती है। चाहे वह प्रकार शारीरिक, आर्थिक, मानसिक, शैक्षिक या सामाजिक क्यों न हो ?

शिक्षा प्रकाश है, जो मानव का हर प्रकार से मार्गदर्शन कराती है। शिक्षा मानव–जीवन का सूर्य है, जिसके उदय के साथ जीवन में नवीन संचार और स्पष्ट अवलोकन का विवेक प्राप्त होता है और यदि यह उदित ही न हुआ तो व्यक्तित्व भोर के प्रकाश में भ्रमपूर्ण रह जाता है। अर्थात् प्रकाश तो है, पर उसमें इतनी दीप्ति नहीं कि प्रत्येक चेहरा साफ दीख सके। शिक्षा जीवन की सर्वांगीणता का द्योतक है, भलाई–बुराई, दाँव–पेंच को समझने का साधन है।

शिक्षा प्रगति की धुरी है। शिक्षा एवं विकास एक दूसरे के पूरक हैं अथवा शिक्षा + विकास राष्ट्र की स्वस्थ आँखे हैं। या यों कहें एक सिक्के के दो पहलू। लड़की तो पराया धन है। उसे घर–परिवार ही तो देखना है। इन विचारों की हमारे समाज में गहरी पैठ है, जो नारी के विकास में बाधक सिद्ध हो रही है। इस मानसिकता से ग्रसित माता–पिता अपनी पुत्रियों की शिक्षा पर ध्यान नहीं देते, और यहीं से नारी समुचित साधनों से पिछड़ने लगती है। नारी को अशिक्षा के गर्त से खींचकर निकालने वालों की कमी नहीं है। अगणित प्रयास हुए हैं। सफलता भी कुछ हद तक मिली है। पर आंशिक, जो वर्तमान में नारी शिक्षा की समीक्षा बलवती हो उठी।

वर्तमान बड़ा ही भ्रामक होता है। वर्तमान में हो रही घटना की सत्यता अतीत पर दृष्टि डाले बिना सिद्ध नहीं की जा सकती और वर्तमान की समीक्षा तो इसके बिना सफल हो ही नहीं सकती। विकास एक समय में अचानक नहीं होता। समय के छोटे–छोटे पहिए बहुत से घूम जाते से हैं। किसी भी क्षेत्र में विकास कई चरण में होता है। विकास की समीक्षा के लिए क्रमशः विवेचन आवश्यक है, और जब बात 'वर्तमान भारत में नारी शिक्षा' पर हो रही है, तो क्यों न हम कुछ देर अतीत के पन्ने पलटें। कदाचित् वर्तमान की स्थिति समझने में उपयक्तु हो।

प्राचीन काल में नारी की स्थिति चरमोत्कर्ष पर थी, पुरूषों के समान निर्भय विचरण करने वाली, तीर–तलवार चलाने वाली, शास्त्रार्थ में पारंगत थीं। ज्ञान–विज्ञान, कला, राजनीति, धर्म की मर्मज्ञा थीं। ममता की मूर्ति, आदर्श पत्नी तथा तेजस्वी नारीपद पर अभिषिक्त थीं। मनु की ये पंक्तियाँ उसके व्यक्तित्व को निखारने में सहयोगी हैं– ''यत्र नार्यस्तु पूज्यन्ते रमन्ते तत्र देवता'' वैदिक काल से हम भारतीय संस्ति का विधिवत आरम्भ मानते हैं। इस काल में आदि ग्रन्थों, वेदों की रचना हुई है। सहस्रों वर्षों पूर्व इस काल में भी नारी–शिक्षा की समुचित व्यवस्था हुई, उसका उपयोग भी उस काल की नारियों ने किया। पुरुषों के बराबर शिक्षा प्रदान की जाती थी। इसी काल की प्रज्ञा प्राप्त नारियाँ, शीला, भट्टारिका, मैत्रयी, गार्गी, विश्वतारा, अपाला, घोषा आदि विदुषी महिलाएँ प्रमुख थीं।

दूषित मध्यकाल से नारी की स्थिति बद से बदतर होती गयी उस पर अंकुश लगने प्रारम्भ हो गये। नारी की शिक्षा उच्च घरानों तक सीमित रह गयी, धीरे–धीरे शिक्षा में गिरावट आयी और अबला की स्थिति मैथिली शरण गुप्त के शब्दों में इस प्रकार होती चली गयी।

अनुरूपी लेखक

ASVS Society Reg. No. 561/2013-14

"अबला जीवन हाय! तुम्हारी यही कहानी। आँचल में है दूध, और आँखो में पानी।।"

कुछ ही समय में मुगलों के आक्रमण प्रारम्भ हुए और नारी की शक्ति को अवशोषित करके उसे अबला का नवीन रूप प्रदान किया गया परदे में नारी के बन्धन .ढ़तर होते गये। अत्याचार सहने को विवश नारी की चीत्कार बंगाल की धरा पर राजाराम मोहन राय तथा उत्तर भारत की वसुधा पर महर्षि दयानन्द सरस्वती के कानों तक पहुंची और इन महापुरूषों ने नारी को अभिशाप मुक्त करने के लिए क्रान्ति का बिगुल बजाया। कवियों की लेखनी ने भी क्रान्ति के गीत गाये श्री पन्त ने लिखा है।

"मुक्त करो नारी को, मानव मुक्त करो नारी को। युग–युग की निर्मम कारा से, जननी सखि प्यारी को।।

उन्नीसवीं शताब्दी के मध्य कुछ समाज–सुधारकों ने नारी शिक्षा को केन्द्रीय मान्यता दी। 'ईश्वर चन्द विद्यासागर', 'राजाराम मोहन राय' एवम् 'दयानन्द सरस्वती' ने बालिकाओं की शिक्षा हेतु कई विद्यालय खोले। यही समय था जब भारतीय बालिकाओं हेतु औपचारिक स्तर पर शिक्षा–व्यवस्था के प्रयास प्रारम्भ हुए। 1819 में सर डेविड हेयर ने 'बालिका समाज' नामक संस्था की स्थापना की। अपने स्वार्थ वश ही सही पर अंग्रेजों ने सहयोग किया। सन् 1854 में वुड के घोषणा–पत्र में स्त्री–शिक्षा का भार शासन ने स्वयं ले लिया। 1902 में स्त्रियों के लिए 12 महाविद्यालय 407 माध्यमिक विद्यालय तथा 5628 प्राथमिक विद्यालय खोले गये।

स्वतन्त्रता के पश्चात् जब हमारे राष्ट्र–निर्माता एक सु.ढ़ शक्तिशाली एवम् सम्पन्न राष्ट्र की कल्पना कर रहे थे, तो भी नारी पर विशेष ध्यान देने की आवश्यकता को समझा। उन्होंने भी इस बात को जाना कि एक स्वस्थ राष्ट्र को सुशिक्षित माताओं की आवश्यकता होती है। महान राष्ट्र का स्वप्न द्रष्टा नेपोलियन ने कहा– "तुम मुझे सुशिक्षित माताएँ दो में सुशिक्षित राष्ट्र का निर्माण कर दूँगा।"

यदि प्रत्येक परिवार में एक महिला सुशिक्षित हो और उसका सदुपयोग करें तो पूरा राष्ट्र शिक्षित हो जायेगा। इसी बात को ध्यान में रखते हुए सन् 1948 में भारत सरकार द्वारा "विश्वविद्यालय शिक्षा आयोग" का गठन किया गया। जिसने नारी शिक्षा में विशेष योगदान दिया। सर्वेक्षण करने के पश्चात्–आयोग ने नारी–शिक्षा का प्रारूप स्पष्ट किया। आयोग ने अपना उद्देश्य सुयोग्य माताओं, गृहिणियों को विकास एवम् नारी शिक्षा का प्रसार करने हेतु बनाया। इसके लिए पाठ्यक्रम में गृह, अर्थशास्त्र, गृहप्रबन्ध और गृह विज्ञान आदि विषयों का प्रावधान किया गया जो आज भी ज्यों का त्यों है। स्वतन्त्रता प्राप्ति के पश्चात् भारत वर्ष में 59 महाविद्यालय 2370 माध्यमिक विद्यालय एवम् 21,479 प्राथमिक विद्यालय है। भारत जैसे विशाल एवम् रूढ़िवादी देश में केवल 'विश्वविद्यालय आयोग का गठन' कर नारी शिक्षा के उद्देश्य की पूर्ति नहीं की जा सकती। अतः 1958 में दुर्गाबाई देशमुख की अध्यक्षता में राष्ट्रीय शिक्षा–समिति का गठन हुआ जिसने नारी–शिक्षा की कुछ आवश्यकताओं को ध्यान में रखते हुए सुझाव दिये–

1. बालिकाओं की शिक्षा को कुछ समय के लिए राष्ट्रीय समस्या स्वीकार किया जाए।
2. महिलाओं की शिक्षा हेतु आकृष्ट किया जाए। 3. ग्रामीण क्षेत्रों में विशेष ध्यान दिया जाए।
4. बालिकाओं की शिक्षा के प्रति समाज में व्याप्त अन्धविश्वास एवम् रूढ़िवादी परम्पराओं को दूर किया जाए।

समिति के सुझावों से कार्यवाही हुई और अच्छे परिणाम भी सामने आये। अनेक समितियों एवम् संस्थाओं ने योगदान दिया। "राष्ट्रीय महिला शिक्षा–समिति" (1958) राष्ट्रीय महिला शिक्षा, परिषद् (1959), हंसा मेहता (1962) आदि ने नारी शिक्षा एवम् उत्थान के लिए अथक प्रयास किया। फलतः नारी–शिक्षा, प्रत्येक क्षेत्र, प्रत्येक स्तर को उत्कर्ष प्रदान कर रही है। माध्यमिक बोर्ड परीक्षाओं में भी बालिकाओं का प्रदर्शन प्रतिशत् में बेहतर रहता है, फिर भी इनकी साक्षरता का प्रतिशत कम है। हजारों महिलाएँ कम्प्यूटर इन्जीनियर भारत में प्रतिवर्ष निकलती है। आज की नारी आइ०ए० एस०, पी०सी०एस०, डॉक्टर, शिक्षिका, पायलट, कुशल नेतृत्व करने वाली नेता हर स्तर की बुलन्दियों को छू रहीं हैं, फिर भी उपेक्षिता एवं अशिक्षित हैं।

इसका कारण हमारे समाज की मानसिक प्रवृति (पुरूष समाज के विचार) रूढ़ियाँ, अशिक्षा, आर्थिक कठिनाईयों, विद्यालयों का अभाव अथवा सरकार के क्रियान्वित नियम का चुस्ती से पालन न होना इत्यादि उदासीनता है। यह तो बात थी केवल औपचारिक शिक्षा का, जिसका पाठ्यक्रम होता है। जिससे मनुष्य की तार्किक शक्ति का विकास होता है। ज्ञान के वातावरण में वृद्धि होती है। किन्तु एक ऐसी भी शिक्षा होती है, जिससे मानव की सभ्यता–संस्.ति का विकास होता है, उससे समाज एवं चरित्र का विकास होता है।

सेक्स एजुकेशन, चाइल्ड एजुकेशन, एवम् हेल्थ एजुकेशन भी नारी शिक्षा के महत्वपूर्ण आयाम हैं। भारत में इस प्रकार की शिक्षा के प्रति उदासीनता का मूलकारण मानसिकता है, रूढ़िवादिता है, जिसके परिणाम स्वरूप प्रतिवर्ष लाखों महिलाओं, बालिकाओं की मृत्यु होती है। अथवा जीवन भर शारीरिक एवम् मानसिक विकलांगता को ढोना पड़ता है। भारत में प्रति सप्ताह मरने वाली गर्भवती महिलाओं की संख्या अन्य देशों से अधिक है। इससे सम्बन्धित शिक्षा 70ः जीवन प्रदान कर सकती है।

ASVS Society Reg. No. 561/2013-14

किन्तु भारतीय समाज ने स्वयं को कटघरे में बन्द कर रखा है। यह आंखें मूँदे उस कबूतर के समान मरने को तैयार बैठा है, जो इसका तनिक भी ध्यान नहीं देखा कि उसे उड़ना भी आता है। आज का आधुनिक समाज दुहरा चरित्र की चादर ओढ़कर बैठा है। इसी कारण न वह आधुनिक है, न प्राचीन आधुनिकता विचारों की होती है, जिसमें विकास की सम्भावना व सुख निहित होता है दिखावे की नहीं।

जब–तक हम सतही धरातल पर विचार नहीं करेंगे तब तक नारी–शिक्षा का उज्ज्वल रूप सामने नहीं आ सकता, अथवा आभासित नहीं होगा। वर्तमान परिवेश में शिक्षा और विकास दोनों की परिभाषा बदल गयी है। शिक्षा को मात्र पदासीन व धनोपार्जन का साधन मान लिया गया है। भौतिकवाद के घेरे में आ जाने के कारण तमाम तरह की वि. तियाँ समाज में आ गयीं हैं। इससे न केवल शिक्षा के सोपान प्रभावित हुए वरन् नारी को भी उसी दिशा में बहा ले गये, किन्तु यहीं हमें सम्भलना है, विकास के तात्त्विक अर्थ को समझना है। नारी–सुलभ आदर्शों की सुरक्षा समाज का दायित्व और कर्तव्य–अधिकार से जुड़ना नारी का श्रेष्ठ व्यवहार है, तभी तो 'प्रसाद जी' 'कामायनी' महाकाव्य में मनु के मुख से कहलवाते हैं–

"नारी तुम केवल श्रद्धा हो, विश्वास–रजत–नग–पग तल में। पीयूष–स्रोत–सी बहा करो जीवन के सुन्दर समतल में।।" और दूसरी जगह– "दया, माया, ममता लो आज। मधुरिमा लो अगाध विश्वास। हमारा हृदय रत्न–निधि स्वच्छ। तुम्हारे लिए खुला है पाश।।"

कुछ वर्तमान परिवेश में नारियों से छूट रहा है, जिसे नारी को सुशिक्षित होने के साथ–साथ पकड़ना है। वर्तमान परिवेश में नारी अपने कर्त्तव्य–बोध को भूल चुकी है। वह स्वतन्त्र कम स्वच्छन्द अधिक होना चाहती है या यों कहें 'लज्जा का कवच' उतार चुकी है। दूरदर्शन पर विज्ञापन की धारा के साथ नारी की कुत्सित विचार धारा का प्रदर्शन हो ही जाता है। आज अनेक सिने तारिकाएं बड़े गर्व से कहती हैं, अंग–प्रदर्शन कोई बुरी बात नहीं है, तो बुरा क्या हो सकता है? प्र.ति के अन्तर को भला कौन मिटा सकता है ? 'मनुस्मृति' में स्पष्ट लिखा गया है– "असन्तोषी द्विजः नष्टा, सन्तोषी स्वपार्थिवः।" सलज्जा गणिका नष्टा, लज्जाहीनः कुल स्त्रियः।।" इसमें शक नहीं आज की अधिकांश नारियाँ नैतिकता को 'मूर्खता' एवं 'संस्.ति' को 'पिछड़ापन' 'स्वच्छन्दता' को 'स्वतन्त्रता' समझ बैठी हैं। इसके विपरीत सुसंस्कारित महिलाओं को, पुरूषों के सामाजिक ताने–बाने ने त्रस्त कर रखा है। जिसका परिणाम चाहे कितनी भी बुलन्दियों को छू ले, पर सिसकती हुई नींव पर ही उनके विकास की इमारत खड़ी हुई होगी। कितने माता–पिता इस वातावरण से भयभीत अपनी बालिकाओं की प्रतिभा के अनुकूल शिक्षा दिलाने का साहस नहीं जुटा सकते। साधारण मनुष्य की तो बात ही क्या है ? फिल्मी दुनियाँ, जो एक अलग दुनियाँ ही है, वहाँ सब सम्भव है, आधुनिकता के अभिनेता धर्मेन्द्र ने उत्तर दिया, "बेटा तो फिल्म–जगत में जा सकता है, पर बेटी को नहीं जाने दूँगा।" या तो वे समाज के कुत्सित वातावरण से भयभीत है या बेटी–बेटे में अन्तर समझते हैं। दोनों ही स्थितियों में नारी के प्रति .ष्टिकोण बदले हुए हैं।

आज का प्रत्येक विकास स्त्रियों हेतु अभिशाप सिद्ध हो रहा है। अल्ट्रा सोनोंग्राफी जैसी आधुनिक तकनीकि जो बच्चों की विकलांगता आदि जानने के लिए निर्मित की गयी, जिसका उपयोग दिशयान्तरित कर 90ः लड़का–लड़की जानकर गर्भपात करवाने में किया जा रहा है और दुर्भाग्य से यह कार्य उच्च शिक्षित डॉक्टर महिलाएं ही अधिकतर सम्पन्न करती है। कहाँ गयी उनकी शिक्षित मानसिकता? कैसा विकास हुआ, विकास भी आँसू बहा रहा होगा अपने नाम की सार्थकता का दर्द लेकर। आन्ध्र प्रदेश के एक गाँव में आज भी लड़कियों के पैदा होते ही तकिये से उनका मुँह बन्द करके मार डाला जाता है। क्या है ? आधुनिकता ?? अथवा विकास !!

आधुनिकता और स्वतन्त्रता के इस दौर में भी आज मध्य प्रदेश में दासी–प्रथा जीवित है। आम्रपाली को 'नगरवधू' का पद स्वीकार करना पड़ा, जो कई सौ वर्षों तक प्रतिष्ठित पद माना जाता रहा। समय बदल गया, आज नारी के विकास युग ने वेश्यावृत्ति का स्थान ग्रहण कर लिया। लगभग नौ लाख गणिकाएँ इस वृत्ति में घृणित कार्य करके अपना जीवन–यापन कर रहीं हैं। उनके साथ उनके बच्चे भी समाज में उपेक्षित है। क्या कोई बालिका जन्म से वेश्यावृत्ति की शिक्षा लेती है? नहीं इसी समाज के ठेकेदारों ने महिलाओं को सामाजिक अधिकारों से वंचित कर रखा है। जब कि सर वांट्स ने लिखा है–"नारी की कीर्ति स्फटिक दर्पण के स.श है, जो अत्यन्त उज्ज्वल एवं चमकीला होने पर भी दूसरे के एक श्वॉस से मलिन हो जाता है।" पर यह कार्य आज सहज ढंग से समाज के लोग ठेकेदारी के रूप में कर रहे हैं।

'कालगर्ल्स' को जन्म दे रहें है। यदि वास्तव में शिक्षा का विकास है, तो यह क्या है ? एशिया में चौहत्तर करोड़ महिलाएं गायब हैं। UNIFEM की Global Vides Corfesee ने कहा कि 50% हत्याएं पुरुषों द्वारा अपनी पत्नियों की, की जाती है। भारत में लगभग 5,000 औरतों का जीवन ससुराल पक्ष से ही समाप्त कर दिया जाता है।

अतः उपर्युक्त रूप से अधिकांश नारियों का चरित्र–चित्रण करने में, व्यंग्य में, हास्यास्पद वातावरण उपस्थित कर रहीं है, यही कुछ नारियों के लिए सच है। कुल मिलाकर कहीं समाज, कहीं स्त्री समाज स्वयं शिक्षा का उपयोग नहीं कर

ASVS Society Reg. No. 561/2013-14

पा रहा है। किन्तु सभी कमियों का निराकरण करते हुए नारियों को अपना प्राचीन स्थान ग्रहण करना होगा। तभी 'नर से भारी नारी' सूक्ति सार्थक हो सकती है। नारी शब्द की व्युत्पत्ति संस्त में 'नारि' हिन्दी में 'नारी' तथा ब्रज में 'नार' है, जिसका अर्थ है, 'अग्नि', 'जल' और स्त्री। तीनों के बिना समाज न विकसित हो सकता है, और न कभी विकास करने का दावा कर सकता है।

निष्कर्षतः स्वामी विवेकानन्द के अनुसार– "भारत की स्त्रियों को ऐसी शिक्षा दी जाए, जिससे वह निर्भय होकर भारत के प्रति अपने कर्त्तव्य को भली–भाँति निभा सके और संघमित्रा, जीजाबाई, अहिल्याबाई, मीराबाई आदि भारत की महान, देवियों द्वारा चलायी गयी परम्परा को आगे बढ़ाते हुए वीर–प्रसु बन सकें।" इसी को वर्तमान सन्दर्भ में ग्रहण कर लागू करना है।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

1. कामायनी – जयशंकर प्रसाद
2. साकेत – सुमित्रा नन्दन पंत
3. दैनिक जागरण – हिन्दुस्तान – अखबार
4. रीडर्स डाइजेस्ट
5. नारी–शिक्षा– हनुमान प्रसाद पोद्दार

*****

ASVS Society Reg. No. 561/2013-14